व्हील्स

आज की युवा पीढ़ी न केवल स्टाइलिश लुक चाहती है, बल्कि दमदार परफॉर्मेंस और माइलेज का भी ख्याल रखती है। यही कारण है कि मोटरसाइकिल कंपनियां युवाओं के लिए लगातार नए-नए फीचर से लैस बाइक मॉडल ला रही हैं। भारत में 150 सीसी से लेकर 350 सीसी सेगमेंट की बाइकों की मांग सबसे ज्यादा है। आइए जानते हैं आज के युवाओं की सबसे ज्यादा पसंद की जाने वाली बाइकों के बारे में

युवाओं की पहली पसंद बनीं स्टाइलिश व दमदार बाइकें

रॉयल एनफील्ड हंटर 350

- रॉयल एनफील्ड का नाम ही रॉयल है और इसकी हंटर 350 बाइक आज युवाओं की पहली पसंद बन चुकी है। कंपनी की सबसे किफायती बाइक्स में शामिल यह मॉडल अगस्त 2022 में लांच हुआ था। आज यह न केवल देश में बल्कि विदेशों में भी अपनी धाक जमा चुकी है। हंटर 350 में 350 सीसी का सिंगल सिलेंडर इंजन है, जो 27 एनएम टॉर्क जनरेट करता है। इसका वजन 181 किलोग्राम है। यह दो वेरिएंट्स – रेट्रो (स्पोक रिम, ट्यूब टायर) और मेट्रो (एलॉय व्हील) में आती है। यह बाइक आठ आकर्षक रंगों में उपलब्ध है। 35–40 किमी/लीटर का माइलेज, दमदार परफॉर्मेंस और स्टाइलिश डिजाइन के चलते यह भारत ही नहीं, विदेशों में भी धूम मचा रही है। हंटर 350 को रॉयल एनफील्ड की अब तक की सबसे फुर्तीली और ट्रेंडी बाइक माना जा रहा है।

कीमत 1.50 लाख रुपये से शुरू

माइलेज 35-40 किमी प्रति लीटर

क्यों खास स्टाइलिश लुक, रेट्रो डिजाइन, रॉयल एनफील्ड ब्रांड की विरासत

बजाज पल्सर एन160

बजाज पल्सर एन160 नई पीढ़ी की एक स्टाइलिश और मस्क्युलर बाइक है। जो परफॉर्मेंस, सेफ्टी और डिज़ाइन का बेहतरीन मेल पेश करती है। इसमें 165सीसी का ऑयल–कूल्ड इंजन दिया गया है, जो शानदार पावर और स्मूथ राइडिंग का अनुभव देता है। यह बाइक डुअल चैनल एबीएस के साथ आती है, जो ब्रेकिंग के दौरान बेहतर कंट्रोल और सुरक्षा सुनिश्चित करता है। इसका ऑल–ब्लैक लुक, एलईडी प्रोजेक्टर हेडलाइट, स्लीक टेललाइट और स्पोर्टी बॉडी इसे युवाओं के बीच और भी आकर्षक बनाते हैं। इसकी बेहतर ग्राउंड क्लियरेंस और सस्पेंशन सेटअप खराब रास्तों पर भी आरामदायक राइड देते हैं। हालांकि इसमें ब्लूटूथ कनेक्टिविटी या स्मार्ट जोनेक्ट जैसे स्मार्ट फीचर्स नहीं हैं। लेकिन इसकी ताकतवर परफॉर्मेंस, दमदार लुक और बजट फ्रेंडली प्रकृति इसे एक भरोसेमंद मिड–साइज बाइक बनाती है।

कीमत 1.30 लाख रुपये से शुरू

माइलेज 40-45 किमी प्रति लीटर

क्यों खास डुअल चैनल एबीएस, दमदार ब्रेकिंग, नया इंजन ट्यून

केटीएम ड्यूक 200

- केटीएम ड्यूक 200 एक प्रीमियम स्पोर्ट्स नेकेड बाइक है। जो युवाओं के बीच अपनी रफ्तार, स्टाइल और एग्रेसिव डिज़ाइन के लिए जानी जाती है। इसका 199 .5 सीसी का लिक्विड–कूल्ड, सिंगल–सिलेंडर इंजन जबरदस्त पावर और तेज़ पिक–अप देता है, जो शहर की सड़कों से लेकर हाईवे तक शानदार प्रदर्शन करता है। हल्का ट्रेलिस फ्रेम और बेहतर वज़न संतुलन इसे स्टंट और ट्रैफिक दोनों के लिए उपयुक्त बनाता है। इसमें मिलने वाली शानदार रोड ग्रिप, डब्ल्यूपी सस्पेंशन, एलईडी लाइट्स और डिजिटल डिस्प्ले इसे और भी प्रीमियम फील देते हैं। बाइक का आक्रामक लुक और ऑरेंज–सिग्नेचर थीम इसे यूथ आइकन बना देती है। हालांकि, इसका माइलेज थोड़ा कम है और मेंटेनेंस कॉस्ट अपेक्षाकृत ज्यादा हो सकता है। फिर भी, स्पीड और स्पोर्टी एक्सपीरियंस चाहने वालों के लिए यह बाइक एक बेहतरीन विकल्प है।

कीमत 1.96 लाख रुपये से शुरू

माइलेज 33–35 किमी प्रति लीटर

क्यों खास रेसिंग डीएनए, अडवेंचरस लुक, टॉर्की इंजन

टीबीएस अपाचे आरटीआर-160 4वी

टीबीएस अपाचे आरटीआर–160 4वी एक स्पोर्टी, किफायती और फीचर–लोडेड बाइक है। जो खासकर युवा राइडर्स के बीच बेहद लोकप्रिय है। इसका 159 .7 सीसी का ऑयल–कूल्ड इंजन बेहतरीन पावर और माइलेज का संतुलित अनुभव देता है। जिससे यह शहर और हाईवे दोनों पर दमदार प्रदर्शन करती है। बाइक में स्मार्ट जोनेक्ट तकनीक के साथ ब्लूटूथ कनेक्टिविटी, गियर शिफ्ट इंडिकेटर, डिजिटल इंस्ट्रूमेंट क्लस्टर और तीन राइडिंग मोड्स जैसे मॉडर्न फीचर्स मिलते हैं। इसका मस्कुलर टैंक और एग्रेसिव ग्राफिक्स इसे एक प्रीमियम स्पोर्ट्स लुक देते हैं। टीवीएस की विश्वसनीयता, कम मेंटेनेंस कॉस्ट और किफायती सर्विस इसे कॉलेज स्टूडेंट्स और डेली कम्यूटर के लिए परफेक्ट चॉइस बनाते हैं। यह बाइक उन लोगों के लिए है जो स्टाइल, परफॉर्मेंस और बजट – तीनों को एक साथ पाना चाहते हैं।

कीमत 1.25 लाख रुपये से शुरू

माइलेज 40-45 किमी प्रति लीटर

क्यों खास ब्लूटूथ कनेक्टिविटी, सस्पेंशन और बैलेंस का बेहतरीन कॉम्बिनेशन

यामाहा आर-15 वी-4

- यामाहा आर–15 वी–4 एक स्पोर्टी और स्टाइलिश बाइक है। जो खास तौर पर युवाओं के बीच बेहद लोकप्रिय है। इसका 155 सीसी का लिक्विड–कूल्ड, 4–स्ट्रोक वीवीए इंजन शानदार पिक–अप और स्मूद परफॉर्मेंस देता है। यह न सिर्फ तेज़ रफ्तार में बेहतरीन स्थिरता देता है, बल्कि माइलेज के मामले में भी अच्छा विकल्प माना जाता है। इसमें मिलने वाले ट्रैक्शन कंट्रोल सिस्टम, डुअल चैनल एबीएस, स्लिपर क्लच और एलईडी हेडलाइट्स जैसे एडवांस फीचर्स इसे एक प्रीमियम स्पोर्ट्स बाइक बनाते हैं। बाइक का डिज़ाइन पूरी तरह से रेसिंग इंस्पायर्ड है, जिसमें एग्रेसिव फ्रंट, एयरोडायनामिक बॉडी और स्टाइलिश ग्राफिक्स दिए गए हैं। इसका डिजिटल इंस्ट्रूमेंट क्लस्टर और ब्लूटूथ कनेक्टिविटी जैसे स्मार्ट फीचर्स भी युवाओं को खूब लुभाते हैं।

कीमत	माइलेज	क्यों खास
1.82 लाख रुपये से शुरू	40–45 किमी प्रति लीटर	डुअल एबीएस, ट्रैक्शन कंट्रोल, एलईडी हेडलाइट्स

* बाइकों के प्राइस सभी प्रदेशों में अलग हो सकते हैं।

बाजार दिखा बड़ा लेकिन खरीदार है छोटा

टिक पाएगी टेस्ला इंडिया में!

मुंबई के बांद्रा-कुर्ला कॉम्प्लेक्स की चमचमाती सड़कें, शीशे के भव्य शोरूम में खड़ी एक कार और बाहर भीड़ का उत्साह 15 जुलाई की सुबह कुछ ऐसी ही थी, जब भारत में टेस्ला ने आधिकारिक तौर पर कदम रखा। टेस्ला यानी उस सपने का नाम, जो अमेरिका में नवाचार की पहचान बन चुका है। लेकिन भारत में यह सपना साकार होगा या फिर वही हश्र होगा जो पहले भी कई विदेशी कंपनियों का हुआ, यही सवाल आज देश का हर गंभीर ऑटो विशेषज्ञ पूछ रहा है। टेस्ला की Model Y भारत में लॉन्च हुई है, जिसकी कीमत 60 लाख से 70 लाख के बीच है। यह गाड़ी आम आदमी के सपनों से कहीं दूर है, और इसीलिए यह चर्चा का विषय बन गई है। भारत में जहां कारों की औसत कीमत 11.5 लाख है, वहीं टेस्ला की शुरुआती कीमत छह गुना अधिक है। सवाल यह नहीं कि टेस्ला महंगी क्यों है, सवाल यह है कि भारत जैसे मूल्य-संवेदनशील बाजार में क्या यह टिक पाएगी?

टेस्ला को बनानी होगी जगह

- भारत में गाड़ी खरीदना केवल यात्रा का जरिया नहीं, यह स्टेटस सिंबल भी है। लेकिन स्टेटस के साथ–साथ भारतीय ग्राहक "वैल्यू फॉर मनी" भी चाहता है। भारत में आज भी SUV सेक्टर में 20–30 लाख की रेंज में टाटा, महिंद्रा और हुंडई जैसी कंपनियों का बोलबाला है। टेस्ला अगर इस रेंज में आती तो शायद बड़ी हलचल मचती, लेकिन 60 लाख से ऊपर की रेंज में वो खरीदारों का एक सीमित तबका ही पकड़ सकती है। और यह सीमित तबका भी टेस्ला के लिए आसान नहीं होगा। भारत में मर्सिडीज–बेंज, बीएमडब्ल्यू और पोर्शे पहले से इस प्रीमियम सेगमेंट में मौजूद हैं। साल 2024 में भारत में 50 लाख से ऊपर की गाड़ियों की हिस्सेदारी मात्र 1 से 1.5% थी। यानी 100 में से सिर्फ एक या दो खरीदार ही इस रेंज में खर्च करते हैं। टेस्ला को इन्हीं के बीच अपनी जगह बनानी होगी।

भारत की ईवी नीति और इंपोर्ट टैक्स बड़ी चुनौती

भारत की EV नीति और इंपोर्ट टैक्स भी टेस्ला के लिए बड़ी चुनौती हैं। फिलहाल जो मॉडल लॉन्च किए गए हैं, वे चीन की शंघाई फैक्ट्री से आयातित हैं। भारत में इलेक्ट्रिक गाड़ियों पर 70% से ज्यादा इंपोर्ट ड्यूटी लगती है। यही कारण है कि टेस्ला की कीमतें भारत में दो गुना हो जाती हैं। अगर कंपनी भारत में मैन्युफैक्चरिंग शुरू करती है और सरकार की नई EV नीति के तहत 4,150 करोड़ का निवेश करती है, तो उसे इंपोर्ट ड्यूटी में राहत मिल सकती है। लेकिन मस्क इस पर अब तक कोई साफ संकेत नहीं दे पाए हैं। अब बात करें ब्रांड के भावनात्मक पक्ष की। भारत में आईफोन जैसे महंगे ब्रांड्स की भी सीमित पहुंच है। आज भी भारत में एप्पल की बाजार हिस्सेदारी केवल 7–12% है, जबकि अमेरिका में यह 40% के आसपास है। इसका सीधा अर्थ है कि भारत के मध्यम वर्ग में महंगे ब्रांड्स का क्रेज तो है, लेकिन जेब उतनी मजबूत नहीं। ऐसे में टेस्ला को भी वही चुनौती झेलनी होगी, जो एप्पल झेल रही है "ब्रांड दिखे, पर बिके नहीं।" उद्योग जगत भी इस एंट्री को लेकर सतर्क है। एक प्रमुख भारतीय ऑटोमोबाइल ग्रुप के अध्यक्ष ने तो एलन मस्क को सोशल मीडिया पर चुनौती देते हुए लिखा "चार्जिंग स्टेशन पर मिलते हैं!" यह सिर्फ एक मजाक नहीं, बल्कि एक सीधा संदेश है कि टेस्ला को भारतीय ब्रांड्स हल्के में नहीं लेने वाले। टाटा मोटर्स और महिंद्रा जैसी कंपनियां पहले ही 10 से 25 लाख की रेंज में EV गाड़ियाँ उपलब्ध करा रही हैं, जो आम भारतीयों की जरूरत और बजट दोनों से मेल खाती हैं।

भारत का चार्जिंग इन्फ्रास्ट्रक्चर एक बड़ी चुनौती

- अब सवाल यह भी है कि क्या भारत का चार्जिंग इन्फ्रास्ट्रक्चर टेस्ला जैसे ब्रांड को सपोर्ट करने के लिए तैयार है? फिलहाल नहीं। टेस्ला ने भले ही मुंबई और दिल्ली मेंसुपरचार्जिंग स्टेशन लगाने की योजना बनाई हो, लेकिन पूरे देश में नेटवर्क बनाना एक लंबी प्रक्रिया है। और जब तक यह नेटवर्क तैयार नहीं होता, तब तक टेस्ला का बाजार केवल दिखावे तक सीमित रहेगा। टेस्ला का भविष्य इस पर भी निर्भर करेगा कि वह भारतीय ग्राहकों के लिए क्या पेशकश करती है। अगर टेस्ला भविष्य में 40–45 लाख की रेंज में कोई मॉडल लाती है, तो वह मिड प्रीमियम ग्राहकों को आकर्षित कर सकती है। ये वही ग्राहक हैं जो 30 लाख की गाड़ी खरीदने की हैसियत रखते हैं और ब्रांड वैल्यू के लिए थोड़ा और खर्च करने को तैयार रहते हैं। लेकिन जब सामने टाटा, महिंद्रा और हुंडई जैसे भरोसेमंद ब्रांड हों, तो टेस्ला को केवल ब्रांड इमेज के सहारे सफलता नहीं मिलेगी। इतिहास भी यही कहता है। हर्ले डेविडसन, शेव्रले और फोर्ड जैसी कंपनियों ने भी भारत में धमाकेदार एंट्री की थी, लेकिन कुछ वर्षों बाद उन्हें भारत छोड़ना पड़ा। वजह साफ थी भारतीय बाजार को समझने में चूक। सिर्फ नाम और टेक्नोलॉजी से भारत में गाड़ी नहीं बिकती, यहां लोगों की जरूरत, खर्च की सीमा और सेवा नेटवर्क की अहम भूमिका होती है।
- भारत में EV का भविष्य उज्ज्वल है, लेकिन अभी शुरुआती दौर में है। 2025 तक कुल गाड़ियों की बिक्री में EV की हिस्सेदारी केवल 4% रहने का अनुमान है। ऐसे में टेस्ला को जल्दबाजी नहीं, बल्कि रणनीति से काम लेना होगा। उसे भारत के लिए खास मॉडल, कीमत और सर्विस नीति बनानी होगी। टेस्ला की भारत में एंट्री एक नई शुरुआत है, लेकिन इसका भविष्य इस पर निर्भर करेगा कि क्या एलन मस्क भारत को सिर्फ एक बाजार नहीं, बल्कि एक साझेदार मानते हैं। अगर वह भारत में उत्पादन, रोजगार और तकनीक साझा करते हैं, तो उन्हें भारत का दिल भी मिलेगा और बाजार भी। वरना यह एंट्री भी एक शानदार लेकिन अल्पकालिक तमाशा बनकर रह जाएगी।

ऑटो टिप्स

बारिश में क्यों फटते हैं गाड़ी के टायर

टायर फटना यानी खतरे का संकेत। अचानक होने वाली घटना होती है टायर फटना, खासकर जब आप कहीं जा रहे हो। टायर फटने की वजह से कई बार बड़े हादसे होते हैं जिनकी वजह से लोगों की जान तक चली जाती है। अक्सर देखने में आता है कि लोग गाड़ी का ध्यान तो खूब रखते हैं लेकिन टायर्स की देखभाल नहीं करते और बाद में उन्हें नुकसान उठाना पड़ता है। बारिश में टायर फटना आम बात है। बारिश के गड्ढों में ईंट या गिट्टी की कचक से भी टायर कई बार फट जाते हैं जब गड्ढे में गाड़ी हिचकोले खाते हुए अंदर से बाहर सड़क पर आती है। अगर टायर में हवा जरूरत से ज्यादा है तो टायर फट सकता हैं। कम हवा होने पर टायर ज्यादा गर्म होता है और दीवारें झुकती हैं, जिससे ब्लोआउट का खतरा बढ़ता है।

ओवरलोडिंग

- गुरुनानक आटोमोबाइल्स के आनर्स राजू बताते हैं कि जब गाड़ी की क्षमता से ज्यादा लोड डाला जाता है, तो टायरों पर अतिरिक्त दबाव पड़ता है और तेज रफ्तार पर टायर ब्लास्ट हो सकता है। वे बताते हैं कि पंक्चर, कील, तेज पत्थर या कोई नुकीली वस्तु टायर की सतह को डैमेज कर देती है। हाईवे पर तेज रफ्तार में गड्ढे में लगने से टायर का साइडवॉल फट सकता है।

पुराने या घिसे हुए टायर

- कंपनी डीलर्स के मुताबिक टायर की उम्र 5–6 साल होती है या अधिकतम 40,000–50,000 किमी तक। घिसे हुए टायरों की ग्रिप कम होती है और रबर सख्त होकर क्रैक करने लगता है, जिससे ब्लोआउट हो सकता है। टायर फटने का एक कारण यह भी माना जाता है कि अगर टायर सही ढंग से फिट नहीं किया गया है या रिम खराब है, तो टायर संतुलन खो सकता है और फट सकता है।